KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A8 PAGE NO.27-29
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

प्राचीन भारत के प्रमुख बौद्ध शिक्षण संस्थान

[1]हरवंश

[1]शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

छठी शताब्दी ई0 पू0 के प्रारम्भ में भारत में सार्वभोम सत्ता का अभाव था। महात्मा बौद्ध के जन्म के कुछ समय पूर्व उत्तर भारत सोलह महाजनपदों में विभक्त था। इस काल में कुछ गणराज्यों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। इन्हीं में से कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान शुद्धोधन के घर गौतम का जन्म हुआ। राजकुमार गौतम के लिए पिता ने शिक्षा का विशेष प्रबन्ध किया। गौतम को सांसारिक विषयभोगों एवं क्रिया कलापों में सन्तोष नहीं मिला और इन्होंने 20 वर्ष की आयु में घर त्याग कर दिया। इसी घटना को बौद्ध शब्दावली में "महाभिनिश्क्रमण" कहा गया। ज्ञान प्राप्ति के बाद के अनुभवों एवं तर्कों के आधार पर सिद्धार्थ ने बौद्ध धर्म की स्थापना की। प्रारम्भ से ही इस धर्म को शासकों एवं वशों ने बाहरी या आन्तरिक रूप में समर्थन दिया जैसे हर्यक, शाक्य, लिच्छवि, मल्ल एवं नाग आदि । अशोक बौद्ध धर्म का बड़ा सरंक्षक बना और इसने प्रचार हेतु प्रचारक विदेशों में भेजे।[1] मौर्योत्तर युग के शुंग, सातवाहनों, ग्रीक, कुषाणो के साथ–साथ गुप्त काल तक भी बौद्ध धर्म प्रगति करता रहा।[2] हर्षवर्धन भी सहिष्णु एवं बौद्ध धर्म अनुयायी शासक था। इसने बौद्ध धर्म के कल्याण हेतु अनेक कार्य किये।[3] पूर्व मध्यकाल में भी अनेक राजवंश थे जिन्होने बौद्ध धर्म को आश्रय दिया । जैसे कारकोट, गुर्जर प्रतिहार, गहडवाल, चन्देल, पाल,भूमिकार आदि।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org